पांडुलिपि विज्ञान एवं लिपिविज्ञान डिप्लोमा पाठ्यक्रम

अध्ययन केन्द्र : वैदिक संशोधन मण्डल, पुणे (VSM-Pune)

विश्वविद्यालय : केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

2024-25

द्वितीय पत्र

प्रदत्तकार्य – भारत के विभिन्न भागों से प्राप्त महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों का परिचय

नाम – शरद चंद्र

नामाङ्कन संख्या - PD/24-25/1018

भारत के विभिन्न भू-भागों से प्राप्त महत्वपूर्ण हस्तलेखों का परिचय

<u>भूमिका</u> पाण्डुलिपियाँ किसी भी देश की धरोहर होती हैं। उनमें उस देश के अतीत का इतिहास छिपा रहता है तथा तत्कालीन समाज, संस्कृति एवं साहित्य से सम्बद्ध अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनायें होती हैं| अंग्रेजी शासन के दौरान जब संस्कृत विषय के प्रति रुचि उदित हुई और उन लोगों ने हमारी प्राचीन संस्कृति की जांच-पड़ताल शुरू की तब उन्होंने हमारी हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को खोजने का प्रयास आरम्भ किया| सन् १७८४ ई० में कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश सर विलियम्स जोन्स द्वारा कविकुलगुरु कालिदास की अमर नाट्यकृति अभिज्ञानशाकुन्तलम् का अंग्रेजी में रूपान्तर होने पर तथा कालान्तर (सन् १८१२ ई० में) में जॉन फॉस्टर द्वारा उसी अनुवाद का जर्मनी भाषा में प्रत्यनुवाद होने से- संस्कृतभाषा के साहित्य-सौष्ठव का परिचय पाश्चात्त्य विद्वानों को मिला। जर्मनी के महाकवि एवं समीक्षक-प्रवर गेटे ने तो अभिज्ञानशाकुन्तल को स्वर्ग एवं पृथ्वी की संगमस्थली निरूपित किया। परन्तु इसी के साथ पाश्चात्त्य एवं पौरस्त्य विद्वानों ने समवेत रूप से एक नया अभियान चलाया। वह अभियान था-पाण्डुलिपियों के अन्वेषण का।

(1) बक्शालि पांडुलिपि :- भारत के उत्तर-पश्चिम काश्मीर के नजदीक मर्दान प्रान्त के बक्षालि स्थल से भूर्जपत्र पर लिखी हुई एक पाण्डुलिपि मिली, जिसमें 70 पृष्ठ थे, जिसके साथ कुछ टूटे-फुटे पन्ने भी थे। इन पृष्ठों का आकार 7 ईंच x 4 ईंच था। ई.स. 1881 में होर्नेल नामके विद्वान् को किसी पोलिस-इन्स्पेक्टर ने जानकारी दी थी। इसमें गणित-शास्त्र का विषय निरूपित किया गया है, तथा यह पाण्डुलिपि आज ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी की बोडलियन लाईब्रेरी में संगृहीत की गई है। ऐसा लगता है कि यह प्रति संभवतः 12वीं शती में लिखी गई होगी। इस हस्तलिखित पाण्डुलिपि का सम्पादन एवं प्रकाशन न्यू इम्पिरियल सिरीझ, वॉ. 43, ई.स. 1927-33 में हुआ है।

(2) गिलगित पाण्डुलिपि :- काश्मीर प्रदेश के सीमान्त प्रदेश में आये गिलगित ग्राम के एक बौद्ध स्तूप से कतिपय पाण्डुलिपियाँ मिली हैं। आकस्मिक रूप से किसी चरवाहे (गोपालक) के द्वारा इनकी प्राप्ति हुई थी। किन्तु गिलगित के वजीरे आलम द्वारा ये पाण्डुलिपियाँ प्राप्त की जाय उससे पहले प्रारम्भिक सचित्र पृष्ठ नष्ट हो चुके थे। इन सब को काश्मीर के दरबार में, सरकारी नियन्त्रण में रखी गई है। लिपिशास्त्र की दृष्टि से ये पाण्डुलिपियाँ 7 वीं शती से अधिक अर्वाचीन नहीं हो सकती है। तथा, भारत से प्राप्त हुई सब से प्राचीनतम पाण्डुलिपियाँ यही हैं। इन पाण्डुलिपियों में प्रयुक्त की गई भाषा के स्वरूप को देख कर, प्रॉफेसर फ्रेन्कलीन एडजर्टन ने उसे "बौद्ध हाईब्रीड संस्कृत" का नाम दिया है। ऐसी भाषा "महावस्तु" एवं "ललितविस्तर" में पायी जाती है। इन पाण्डुलिपियों की प्रमुख विशेषता यही है कि इन में किसी एक ग्रन्थ की समाप्ति होने पर, तुरंत दूसरे ग्रन्थ का आरम्भ किया गया है। अर्थात् किसी एक ग्रन्थ की समाप्ति होने के बाद कुछ भाग खाली नहीं छोडा गया है। (इस तरह की पद्धति तिब्बत में Tibetan xylographs (जिसमें लकडी में अक्षरों को उत्कीर्ण किए होते है। ऐसी पाण्डुलिपि से प्रिन्टींग कार्य में सुविधा रहती है।) Sir Aurel Stein ने इन पाण्डुलिपियों की जानकारियाँ दी थी, तथा डॉ. नलिनाक्ष दत्त ने उनका ई.स. 1939 में सम्पादन किया है।

(3) बेवर पाण्डुलिपि (Bower manuscript):- लेफ्टनन बावर नामके अंग्रेज ने उसको खोज निकाली थी, इस लिए उसको "बावर हस्तप्रति" कहते हैं। कुचर नामक स्थल, जो मध्य एशिया में आया हुआ है वहाँ के किसी बौद्ध स्तूप जैसे मकान को खोदने पर, ये पाण्डुलिपियाँ मिल आयी थी। रुडोल्फ होर्नेल (A. F. Rudolf Hoernle) ने इन पाण्डुलिपियों को पढने का कार्य किया। उन्होंने बताया है कि पाण्डुलिपियों की इस पोथी में पाँच अलग अलग विषयों की पाण्डुलिपियाँ है। जैसे कि, प्रथम भाग में मेडिसीन से जुडे विषय का निरूपण 31 पृष्ठों में किया है। दूसरे में, कोई अन्य औषध-विज्ञान से जुडी पाण्डुलिपि के अवशिष्ट रहे पाँच

पृष्ठ हैं। तीसरे चौथे में, कहावत या लोकोक्तियाँ रूप वचनों का संग्रह है, जो पाँच एवं छह पृष्ठों में लिखा गया है। अन्तिम पृष्ठों में, भगवान् बुद्ध ने जैतवन में अपने शिष्य को दिया उपदेश है। उसमें बताया है कि सर्पदंश को कैसे दूर किया जा सकता है। कुल 56 भूर्जपत्रों में ये सारे विषयों का निरूपण है।

(4) खरोष्टी लिपि में लिखा धम्मपदः- फ्रान्स के प्रवासी को ई.स.1892 में, खोतान (पश्चिम चीन) नामके स्थान से भूर्जपत्र पर लिखी हुई एक पाण्डुलिपि मिली थी। इस प्रवासी का नाम ड्यूट्यूल डि रिन्स (Dutreuil de Rhins) था। इस पाण्डुलिपि को पेरिस में सुरक्षित की गई है। तत्पश्चात्, दूसरे फ्रेन्च प्रवासी M. Grenard को उसी पाण्डुलिपि का अवशिष्ट भाग मिल गया। लेकिन किसी अज्ञात कारण से उस पाण्डुलिपि को काशगर में रशिया के अफसर को बेच दिया गया। बाद में, M. Petrowsky की सलाह से उसको रूस की Imperial Academy at St. Petersburg में भेज दिया गया। यह पाण्डुलिपि का समय 200 ई.स. माना गया है। ई.स. 1899 में पहचाना गया कि उसको खरोष्टि लिपि में एवं प्राकृत भाषा में लिखी गई है।

(5) तुर्फान मेन्युस्क्रिप्ट (Turfan Manuscript) :- तुर्फान नाम के स्थान से ताडपत्र पर लिखी एक पाण्डुलिपि मिली है। इस में उत्तर भारत के क्षत्रप एवं कुषाणकालिक लिपि का विनियोग हुआ है तथा उसमें बौद्ध कवि अश्वघोष के शारिपुत्र-प्रकरणम् नाटक के कुछ त्रुटितांश मिल आये हैं। ताडपत्र पर लिखी यह पाण्डुलिपि सब से पुरानी मानी जाती है। जर्मन विद्वानों ने 1902 में उसकी खोज की थी, अतः यह पाण्डुलिपि बर्लिन में सुरक्षित की गई है। ल्युडर्स नामके विद्वान ने इस पाण्डुलिपि के विकीर्ण पृष्ठों का बडे कष्ट के साथ मिलान किया है।

(6) पैप्पलाद शाखा की पाण्डुलिपि:- जम्मू-कश्मीर के महाराजा रणवीर सिंह ने ई.स. 1875 में लेफ्टिनेन्ट गवर्नर विलियम मूर (William Muir) को अथर्ववेद की

पैप्पलाद शाखा की एक भूर्जपत्र पर लिखी हुई पाण्डुलिपि भेट की। उन्होंने उस पाण्डुलिपि को जर्मनी के प्रॉफेसर रुडोल्फ रॉब (Rudolf Roth) को भेजी। यह पाण्डुलिपि अथर्ववेद की काश्मीरी शाखा का प्रतिनिधित्व करनेवाली एकलौती (codex unicum) पाण्डुलिपि थी, जो अतिमूल्यवान् प्रति मानी गई है। उस प्रति के कुल पृष्ठ 275 है, और भूर्जपत्र की ईयत्ता 25 X 20 सेन्टी-मीटर है। इसको 450 वर्ष पहले की शारदा-लिपि में लिखी गई है तथा उसको वॉटर प्रूफ श्याही से लिखा गया है। जिस पर वायु की आर्द्रता या पानी का कोई प्रभाव नहीं पडता है। इसका संरक्षण 1895 से, जर्मनी की Tubingen University की लाईब्रेरी में किया गया है।

(7) महाभारत की शारदा पाण्डुलिपि:- इस पाण्डुलिपि को जोर्ज व्युह्लर (G. Buhler) ने गवर्नमेंट ऑफ बोम्बे के लिए काश्मीर से 1875-76 में, खरीद ली थी, जिसको बाद में मुंबई से भाण्डारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टीट्युट, पूणें में स्थानान्तरित की गई है। यह पाण्डुलिपि करीब 16वीं या 17वीं शती में लिखी गई है। इस पाण्डुलिपि को क्रमांक 159, 1875-76 दिया गया है। इस शारदा पाण्डुलिपि में कुल 114 फोलियो है, जिसमें आदि-पर्वन् का सभापर्व एवं वन पर्व का कुछ अंश लिखित है। महाभारत की समीक्षित आवृत्ति तैयार करने के अवसर पर प्रोफेसर. वी.एस. सुकथंकर जी ने इस प्रति का विनियोग किया है। तथा उसको "S" सांकेतिक (siglum) नाम से पहेचान दी गई है। इस प्रति में महाभारत की लघुपाठ परम्परा (textus simplicior) का पाठ संचरित हुआ दिखता है।

(**8) धवला टीका की पाण्डुलिपि:-** कर्णाटक के राजा अमोघवर्ष नृपतुंग (ई.स. 814-871) के समय में, आचार्य पुष्पदन्त भूतबलि-विरचित "षट्-खण्डागम" नामके ग्रन्थ पर एक विस्तृत धवला-टीका लिखी गई थी। इस षट्-खण्डागम का स्थान जैनियों के समाज में बहुत ऊँचा है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि उसमें भगवान् महावीर की वाणी का संग्रह हुआ है। वीरसेन ने इस आगम के प्रथम पाँच आगमों पर "धवला" टीका लिखी है, जिसका विस्तार 72,000 श्लोक-प्रमाण

है। वीरसेन ने गणधरों की कषाय-पाहुडा पर भी एक "जय-मंगला" नाम की टीका लिखी है तथा जयमंगला टीका में 20,000 श्लोक है। लेकिन वह टीका अपूर्ण है। वीरसेन उस टीका को पूर्ण नहीं कर पाये थे, क्योंकि उनका देहावसान हो गया था। अतः उनके ही शिष्य, जिनसेन ने उसको 40,000 श्लोक-प्रमाणवाली टीका लिख कर पूर्ण कर दी। इस टीका को जैन शौरसेनी प्राकृत में लिखी गई है, किन्तु उसमें संस्कृत का भी बहुशः प्रयोग दिखता है। यहाँ मूल आगम ग्रन्थ एवं टीका को मिला कर 1,32,000 ग्रन्थ (1 ग्रन्थ = 32 अक्षर) आये हुए है, जिनको कुल 1478 ताडपत्र पर लिखी गई है। इसकी एकमात्र पाण्डुलिपि, कर्णाटक के मेंगलोर से 31 कि.मी. दूर आये मुडबीद्री नाम के रमणीय गाँव के जैन मन्दिर में सुरक्षित रखी गई है। यह टीका कन्नड लिपि में ताडपत्र पर लिखी गई है, जो संभवतः टीकाकार के स्वहस्तलेख में लिखी गई प्रतीत होती है। इसका लेखनकाल 9वीं शताब्दी माना गया है।

(9) **होरियुजी पाण्डुलिपि (Horiuzi Manuscript)** : बौद्धदर्शन से सम्बद्ध प्रज्ञापारमिता-हृदय-सूत्र एवं उष्णीष-विजय-धारिणी की ताडपत्र पर लिखी गई दो पाण्डुलिपियाँ जापान के होरियुजी स्थान में आये बौद्ध-मठ में सुरक्षित की गई है। इन पाण्डुलिपियों का आकार 28X5 सेन्टी-मीटर है, एवं प्रत्येक पृष्ठ पर सात पंक्तियाँ लिखी गई है। लिपि-विशेषज्ञ जोर्ज व्युह्लर का मत है कि इन पाण्डुलिपियों में गुप्तकालिक ब्राह्मीलिपि के अक्षर है। अतः ये प्रतियाँ 6 शती से अधिक परवर्ती काल की (तथा 7वीं शती से पहेले की) नहीं हो सकती है। कुछ प्रमाणों से ऐसा कहा गया है कि चीन के Nan-Yo(Hank-ko)बौद्धमठ (संघाराम) में रहनेवाले पुजारी के पास थी, जिसको जापान के राजकुमार उमायादो के समय में, अर्थात् ई.स.609 में, जापान लायी गई हैं। इस राजकुमार Umayado ने जापान में कुल 11 संघाराम (मठों) की स्थापना भी करवाई थी, उनमें से एक स्थान होरियुजी है। वहाँ, होरियुजी में रखे दो ताडपत्रों पर यह प्रज्ञापारमिता-हृदय-सूत्र को लिखे गये हैं, तथा अन्त में सिद्ध-मातृका लिपि के

14 ध्वनियों के आकार भी बताये गये हैं। इन पाण्डुलिपियों के सम्पादन का महनीय कार्य मेक्समूलर ने किया है। जिसके अन्त में, व्युहलर के लिपि-विषयक अभिप्राय को परिशिष्ट के रूप में लिखा गया है।)। https://emuseum.nich.go.jp

(10) महाभारत के आदिपर्व पर नेवारी पाण्डुलिपि:- आदिपर्वन् का प्राचीनतम उपलब्ध यह एक ताड़-पत्र पर हस्तलिखित ग्रन्थ है जिसे नेपाल के राजगुरु हेमराज पण्डितजू ने प्राप्त किया है। यह लगभग ७०० साल पुराना है। पूरे ग्रन्थ का लेखन पुरानी हल्की स्याही में है। इसमें केवल आदिपर्वन् है। परन्तु यह अपने आप में सम्पूर्ण है और इसका एक भी पन्ना गायब नहीं है। सामान्य पन्ना २१ इंच × २ १/४ इंच आकार का है और प्रत्येक पन्ने पर समान रूप से ७ पंक्तियाँ हैं। नमूने के चित्रों के आधार पर प्रोफेसर डॉ.वी.एस.सुकथंकर ने इसकी तुलना ब्युहलर के 'पैलियोग्राफिस्ख ताफलन' से की, और यह पाया कि इसकी लिपि ताफल छः, संख्या ४० (कैम्ब्रिज मैन्यु० सं० १६९१, ११७९ ई०) की लिपि से मिलती-जुलती है। महान् महाकाव्य के इस प्राचीनतम नेपाली हस्तलिखित ग्रन्थ का सम्पूर्ण विवरण डॉ.वी.एस.सुकथंकर ने अपने प्रबन्ध 'एपिक स्टडीज़ सात', 'एनल्स' BORI, १८, २०१-२६२', में, आदिपर्वन् के लिए, पूरी तुलना के साथ, दिया है।

(11) मेकार्टने पांडुलिपि:- जी० मैकार्टने कश्मीर के ब्रिटिश रेजीडेण्ट, ले० कर्नल सर तालवोट के सहायक के रूप में काशगर नामक स्थान में चीनी मामलों को देखने के लिए नियुक्त थे। यहीं पर (काशगर में) रहते समय चीनी व्यापारियों से मैकार्टने को कतिपय हस्तलिखित ग्रंथ मिले। सुविधा-हेतु इन हस्तलिखित ग्रंथों को दो भागों में विभक्त किया गया है- (क) पूर्णग्रंथ (ख) अवशेष ।

(क) पूर्णग्रंथ-इनमें कुल ६ गुटके हैं। ये गुटके मध्य एशिया के चीनी तुर्किस्तान की मरुभूमि में स्थित बौद्ध बिहारों के ध्वंसावशेषों से प्राप्त हुए थे। इनमें एक गुटका कूचा नामक स्थान के पड़ोस में स्थित कुमतुरा के उस प्राचीन बौद्ध

स्तूप से मिला था जहाँ से बावेर का हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त हुआ थ। इसमें दो प्रकार की लिपियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। (१) गुप्तकालीन उत्तरी ब्राह्मी तथा (२) मध्य एशिया की खरोष्ठी। दो गुटके खोतान के उत्तर-पूर्व में स्थित अकसुफील तथा जाबूकुम नामक दो स्थानों में प्राप्त हुए। एक गुटका गुमा नामक स्थान से पूर्व में स्थित करकुल के खण्डहर से मिला। एक गुटका कुक गुम्बज नामक मरुप्रदेश के एक खण्डहर में स्थित एक गोल दीवार के भीतर से प्राप्त हुआ। अन्तिम गुटका इसी ध्वंसावशेष के पास के मैदान में पड़ा मिला। ये सभी गुटके कागज के थे। ये ६ गुटके मैकार्टने मैन्युस्क्रिप्टस् के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें से एक गुटका दूसरी शताब्दी का है तथा शेष बाद के हैं।

(ख) अवशेष-जब मध्य एशिया के चीनी तुर्किस्तान की मरुभूमि में प्राप्त होने वाले हस्तलिखित ग्रंथों के बदले अच्छी खासी रकम मिलने लगी तब वहाँ के लोगों ने हवा से इधर-उधर उड़ाए गए हस्तलिखित ग्रंथों के पन्नों-पन्नों के टुकड़ों को भी, सँभाल कर रखना आरम्भ कर दिया। वहाँ के लोग यह जान गए थे कि वे टुकड़े मूल्यवान् हैं। कभी कोई पठान व्यापारी उन लोगों से कुछ छोटे-मोटे सामान के बदले उन ग्रंथशेषों को खरीद लेता था तथा पुनः बेचने के अवसर की खोज में रहता था। ऐसे ही कुछ पठान व्यापारियों से चीन के विदेशी व्यापार के एक व्यवस्थापक ने भारतीय हस्तलिखित बौद्ध-ग्रंथ के अवशेष प्राप्त किए थे। इस चीनी व्यवस्थापक ने अपने पास संग्रहीत १४५ ग्रंथावशेष मैकार्टने को भेंट में दिये थे। इनमें ९ ताड़पत्र थे, १३ भोजपत्र थे तथा १२३ कागज के टुकड़े थे। इनमें कुछ पन्नों पर गुप्तकालीन उत्तर भारत में प्रचलित ब्राह्मी लिपि अंकित है और कुछ पन्नों पर मध्य एशियाई खरोष्ठी। हार्नले ने इन अवशेषों के कुछ भागों का उद्धार किया था। उनके मतानुसार ये अवशेष या ग्रंथशेष उसी स्थान के हो सकते हैं जहाँ से प्राकृत धम्मपद या बेवर अथवा बावेर हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त हुए थे।

इन्हीं ग्रन्थशेषों का प्रसिद्ध नाम है -मैकार्टने कलेक्शन्स ऑफ फ्रेगमेन्टस्। वस्तुतः ये हस्तलिखित ग्रंथों के टुकडे मात्र हैं। हार्नले का विश्वास था कि जिस स्थान पर ये अवशेष प्राप्त हुये थे वह वहीं था जहाँ 'बॉवेर तथा वेबर पाण्डुलिपि ' प्राप्त हुई थी । ये अवशेष तीन भिन्न प्रकार के हैं-ताड़पत्र, भोजपत्र और कागज। इन अवशेषों की संख्या १४५ है, जिनमें से ९ ताड़पत्र हैं, १३ भोजपत्र हैं, और शेष कागज हैं। अवशेष चाहे जिस चीज के हों, लेकिन उन पर दो प्रकार की ब्राह्मी लिपि है, उत्तर भारतीय ब्राह्मी (गुप्तलिपि) तथा मध्य एशियाई। हार्नले ने जेएएसबी १८९७ में इन अवशेषों का एक हिस्सा उद्धृत किया है।

बहरहाल, जो परिपूर्ण पाण्डुलिपियाँ ले०-कर्नल सर ए०सी० तालवोट, काश्मीर में ब्रिटिश रेजीडेंट के काशगर-पदस्थ चीनी मामलों के विशेष सहायक जी० मैकार्टने को प्राप्त हुई थी, उनमें ६ समुच्चय हैं। पहला समुच्चय उसी स्थल पर प्राप्त हुआ जहाँ बॉवेर मैन्युस्क्रिप्ट मिली थी तथा यहाँ प्राप्त एक अन्य मैन्यु० को 'वेबर मैन्युस्क्रिप्ट' में ही स्थान प्राप्त हुआ है। इसकी लिपि दो प्रकार की है-मध्य एशियाई तथा उत्तर भारतीय ब्राह्मी (गुप्त)। चौथा समुच्चय गुमा के लगभग ५० मील पूर्व में करकुल मजाँ खोजाँ में प्राप्त हुआ था। यह हस्तलिखित ग्रन्थ रेत में से सीधे उठा लिया गया था। दूसरा समुच्चय खोटान के उत्तर-पूर्व में अकसुफिल में प्राप्त हुआ था। तीसरा समुच्चय खोटान के उत्तर पूर्व में ५०-६० मील दूर जाबू कुम में प्राप्त हुआ था। पाँचवाँ समुच्चय कुक गुम्बज के मरुस्थल में प्राप्त हुआ था। गुमा से कुक गुम्बज पहुँचने के लिए पाँच दिन चलना पड़ता है। यह समुच्चय एक दीवार में ३ फुट ऊँची, पकाई ईंटों से बनी, गोल दीवार के निकट पाया गया। छठाँ समुच्चय कुक गुम्बज के मैदान में से प्राप्त किया गया था। हार्नले के मतानुसार हस्तलिखित ग्रन्थ १-बी० सम्भवतः दूसरी शताब्दी ईसवी का है। यह ग्रन्थ गहरे रंग के कोमल किस्म के कागज का है। पाण्डुलिपि में पृष्ठ संख्या ऊपर की ओर दी गयी है। इन हस्तलिखित ग्रन्थों के कई पृष्ठ जेएएसबी १८९७ में उद्धृत किये गये हैं।

उपसंहार : भारत के हस्तलिखित पाण्डुग्रन्थों के समीक्षात्मक अध्ययन की शुरूआत करनेवाले यूरोपीय विद्वानों के परिश्रम सराहनीय हैं। यूरोपीय विद्वानों ने भारतीय संस्कृति-शास्त्र (Indology) के इतिहास की जानकारियाँ उपलब्ध करवाने के लिए लम्बे समय तक जो परिश्रम किया है, वह आज भी प्रेरणादायक एवं मार्गदर्शक है। प्रारम्भिक वर्षों में, इस दिशा में कार्य क रनेवाले सर विलियम जोन्स, जेम्स प्रिन्सेप, मैक्समूलर, कोलब्रूक, जॉर्ज व्युह्लर,आफ्रेक्ट, डॉ.रामकृष्ण भंडारकर, प्रोफ़ेसर वी.राघवन, पंडित टी.गणपति शास्त्री, बार्नेट, कर्नल टॉड,प्रो. जुलियस जोली आदि अनेक विद्वानों के नाम सदैव स्मरणीय रहेंगे ॥